1 सूरदास

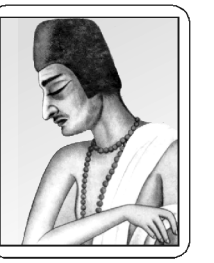

अष्टछाप के सर्वश्रेष्ठ कवि सूरदास का जन्म वैशाख सुदी पञ्चमी, सन् 1478 ई० में आगरा से मथुरा जानेवाली सड़क के पास रुनकता नामक गाँव में हुआ था। कुछ विद्वान् इनका जन्म दिल्ली के निकट सीही गाँव में मानते हैं। सूरदास जन्मान्ध थे या नहीं, इस सम्बन्ध में अनेक मत हैं। ये बचपन से ही विरक्त हो गये थे और गऊघाट में रहकर विनय के पद गाया करते थे। एक बार वल्लभाचार्य गऊघाट पर रुके। सूरदास ने उन्हें स्वरचित एक पद गाकर सुनाया। वल्लभाचार्य ने इनको कृष्ण की लीला का गान करने का सुझाव दिया। ये वल्लभाचार्य के शिष्य बन गये और कृष्ण की लीला का गान करने लगे। वल्लभाचार्य ने इनको गोवर्धन पर बने श्रीनाथ जी के मन्दिर में कीर्त्तन करने के लिए रख दिया। वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने अष्टछाप के नाम से सूरदास सहित आठ कृष्ण-भक्त कवियों का संगठन किया। इनकी मृत्यु गोवर्धन के पास पारसौली ग्राम में सन् 1583 ई० के लगभग हुई।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**सन् 1478 ई०।
- **जन्म-स्थान—**रुनकता।
- **पिता-**रामदास सारस्वत।
- **मृत्यु–**सन् 1583 ई०।
- **भाषा–**ब्रज।
- **शैली–**मुक्तक शैली के गेयपद।
- अष्टछाप एवं भक्तिकाल के कवि।
- **रचनाएँ-** सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली।
- **साहित्य में स्थान-**कृष्णभक्त कवियों में सर्वोच्च स्थान तथा वात्सल्य रस के पुरोधा।

सूरदास के पदों का संकलन **सूरसागर** है। **सूर सारावली** तथा **साहित्य लहरी** इनकी अन्य रचनाएँ हैं। यह प्रसिद्ध है कि 'सूरसागर' में सवा लाख पद हैं, पर अभी तक केवल दस हजार पद ही प्राप्त हुए हैं। 'सूर सारावली' कथावस्तु, भाव, भाषा, शैली और रचना की दृष्टि से निःसन्देह सूरदास की प्रामाणिक रचना है। इसमें 1,107 छन्द हैं। 'साहित्य लहरी' सूरदास के 118 दृष्टकूट पदों का संग्रह है। सूरदास की रचनाओं के सम्बन्ध में इस प्रकार कहा जा सकता है—

''साहित्य लहरी, सूरसागर, सूर की सारावली।
श्रीकृष्ण जी की बाल-छवि पर लेखनी अनुपम चली।''

सूरदास ने कृष्ण की बाल-लीलाओं का बड़ा ही विशद् तथा मनोरम वर्णन किया है। बाल-जीवन का कोई पक्ष ऐसा नहीं, जिस पर इस कवि की दृष्टि न पड़ी हो। इसीलिए इनका बाल-वर्णन विश्व-साहित्य की अमर निधि बन गया है। गोपियों के प्रेम और विरह का वर्णन भी बहुत आकर्षक है। संयोग और वियोग दोनों का मर्मस्पर्शी चित्रण सूरदास ने किया है। **सूरसागर** का एक प्रसंग **भ्रमरगीत** कहलाता है। इस प्रसंग में गोपियों के प्रेमावेश ने ज्ञानी उद्धव को भी प्रेमी एवं भक्त बना दिया। सूर के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है इनकी तन्मयता। ये जिस प्रसंग का वर्णन करते हैं उनमें आत्म-विभोर कर देते हैं। इनके विरह-वर्णन में गोपियों के साथ ब्रज की प्रकृति भी विषादमग्न दिखायी देती है। सूर की भक्ति मुख्यतः सखा भाव की है। उसमें विनय, दाम्पत्य और माधुर्य भाव का भी मिश्रण है। सूरदास ने ब्रज के लीला-पुरुषोत्तम कृष्ण की लीलाओं का ही विशद् वर्णन किया है।

सूरदास का सम्पूर्ण काव्य संगीत की राग-रागिनियों में बँधा हुआ पद-शैली का गीतिकाव्य है। उसमें भाव-साम्य पर आधारित उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं और रूपकों की छटा देखने को मिलती है। इनकी कविता ब्रजभाषा में है। माधुर्य की प्रधानता के कारण इनकी भाषा बड़ी प्रभावोत्पादक हो गयी है। व्यंग्य, वक्रता और वाग्विदग्धता सूर की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। सूर ने मुक्तक काव्य-शैली को अपनाया है। कथा-वर्णन में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। समग्रतः इनकी शैली सरस एवं प्रभावशाली है। सूर का प्रत्येक पद सरसता, मधुरता, कोमलता और प्रेम के पवित्र भावों से पूर्ण है।

सूरदास जी ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं से हिन्दी साहित्य को जो गरिमा प्रदान की है, वह अद्वितीय-अतुलनीय है। सूरदास जी हिन्दी साहित्याकाश के देदीप्यमान सूर्य हैं। जिनके समक्ष कवि साधारण नक्षत्र से आभासित होते हैं। इसीलिए कहा गया है–

सूर-सूर तुलसी ससी, उडुगन केसवदास।
अव के कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकास॥

सूरदास जी हिन्दी साहित्य के प्रतिभासम्पन्न कवि थे। सूरदास जी जहाँ वात्सल्य रस के सम्राट हैं, वहीं श्रृंगार रस को सौन्दर्य प्रदान करने में भी समर्थ हैं। आपने विरह का भी अपनी रचनाओं में बड़ा ही मनोरम चित्रण किया है। सूरदास जी का हिन्दी साहित्य के कृष्ण भक्त कवियों में सर्वोच्च स्थान है।

●●

पद

चरन-कमल बंदौं हरि राइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाइ।
बहिरौ सुने, गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बंदौं तिहिं पाइ।।1।।

अबिगत-गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगे मीठे फल कौ रस, अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरंतर, अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौ अगम-अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति-बिनु, निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातै, सूर सगुन-पद गावै।।2।

किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कै आँगन, बिम्ब पकरिबै धावत।
कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौ, करि सौं पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।
कनक-भूमि पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति।
करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।
बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति।
अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु कौ दूध पियावति।।3।।

मैं अपनी सब गाइ चरैहौं।
प्रात होत बल कै संग जैहौं, तेरे कहें न रैहौं।
ग्वाल बाल गाइनि के भीतर नैकहुँ डर नहिं लागत।
आज न सोवौं नंद-दुहाई, रैनि रहौंगो जागत।
और ग्वाल सब गाइ चरैहैं, मैं घर बैठो रैहौं?
सूर स्याम तुम सोइ रहौ अब, प्रात जान मैं दैहौं।।4।।

मैया हौं न चरैहौं गाइ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसो, मेरे पाइ पिराइ।
जौं न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंहँ दिवाइ।
यह सुनि माई जसोदा ग्वालिन, गारी देति रिसाइ।
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ।।5।।

सखी री, मुरली लीजै चोरि।
जिनि गुपाल कीन्हे अपनैं बस, प्रीति सबनि की तोरि।।
छिन इक घर-भीतर, निसि-बासर, धरत न कबहूँ छोरि।
कबहूँ कर, कबहूँ अधरनि, कटि कबहूँ खोंसत जोरि।।

ना जानौं कछु मेलि मोहिनी, राखे अँग-अँग भोरि।
सूरदास, प्रभु कौ मन सजनी, बँध्यौ राग की डोरि।।6।।

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
वृन्दाबन गोकुल बन उपवन, सघन कुँज की छाहीं।।
प्रात समय माता जसुमति अरु नंद देखि सुख पावत।
माखन रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत।।
गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत, सब दिन हँसत सिरात।
सूरदास धनि-धनि ब्रजवासी, जिनसौं हित जदु-तात।।7।।

ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस।।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्याम सुन्दर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारै नंदनंदन बिनु, और नहीं जगदीस।।8।।

ऊधौ जाहु तुमहिं हम जाने।
स्याम तुमहिं ह्याँ कौ नहिं पठयौ, तुम हौ बीच भुलाने।।
ब्रज नारिनि सौं जोग कहत हौं, बात कहत न लजाने।
बड़े लोग न विवेक तुम्हारे, ऐसे भए अयाने।।
हमसौं कही लई हम सहि कै, जिय गुनि लेहु सयाने।
कहँ अबला कहँ दसा दिगंबर, मष्ट करौ पहिचाने।।
साँच कहौ तुमकौ अपनी सौं, बूझति बात निदाने।
सूर स्याम जब तुमहिं पठायौ, तब नैकहुँ मुसकाने।।9।।

निरगुन कौन देस कौ बासी?
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझति साँच न हाँसी।।
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी?
कैसे बरन, भेष है कैसो, किहिं रस मैं अभिलाषी?
पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जौ रे करैगौ गाँसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी।।10।।

संदेसौं देवकी सौं कहियौ।
हौं तो धाइ तिहारे सुत की, मया करत ही रहियौ।।
जदपि टेव तुम जानतिं उनकी, तऊ मोहिं कहि आवै।
प्रात होत मेरे लाल लड़ैतैं, माखन रोटी भावै।।
तेल उबटनौ अरु तातो जल, ताहि देखि भजि जाते।
जोइ-जोइ माँगत सोइ-सोइ देती, क्रम क्रम करि कै न्हाते।।
सूर पथिक सुन मोहिं रैनि दिन, बढ्यौ रहत उर सोच।
मेरौ अलक लड़ैतो मोहन, ह्वैहै करत सँकोच।।11।।

('सूरसागर' से)

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पदों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) चरन-कमल·····तिहिं पाइ। **(2017AA,19AD)**
   (ख) अबिगत-गति·····सगुन-पद गावै।
   (ग) किलकत कान्ह ····· दूध पियावति।
   (घ) मैया हौं न·····ताहि रिंगाइ।
   (ङ) सखी री, मुरली·····राग की डोरि।
   (च) ऊधौ मन न भए ·····नहीं जगदीस। **(2017AC)**
   (छ) निरगुन कौन ····· मति नासी। **(2017AD,19AB)**
   (ज) ऊधौ मोहिं ·····जदु-तात। **(2017AE, 20MF)**
   (झ) संदेसौ देवकी सौं ·····करत संकोच।
2. सूरदास का जीवन-परिचय एवं उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।
3. सूरदास की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. सूरदास का जीवन-परिचय दीजिए एवं उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CC,CD,17AB,AF,AG, 19AA,AC,AE,AF,AG,20MB,ME)**
5. सूरदास की जीवनी लिखिए तथा उनके काव्यगत सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।
6. सूरदास का जीवन-परिचय लिखिए तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
7. 'चरन कमल बंदौं हरि राइ'—पद में सूरदास ईश्वर के कैसे रूप की वन्दना करते हैं?
8. सूरदास जी के वात्सल्य सम्बन्धी पदों के आधार पर सूर के वात्सल्य-वर्णन की विवेचना कीजिए।
9. सूरसागर में वर्णित उद्धव-गोपी-संवाद प्रसंग 'भ्रमरगीत' के नाम से प्रसिद्ध है, क्यों? स्पष्ट करें।
10. गोपियाँ कृष्ण की मुरली चुरा लेना चाहती हैं, क्यों? (पद 6)
11. ग्यारहवाँ पद किस अवसर का है? कौन किससे कह रहा है?
12. उद्धव को गोपियाँ क्या उत्तर देती हैं? (पद 8 के आधार पर उत्तर लिखिए)
13. उद्धव की बात सुनकर कृष्ण को ब्रज की क्या-क्या चीजें याद आती हैं?
14. गोपियों ने निराकार ब्रह्म का खण्डन जिन तर्कों के आधार पर किया है, उनका संक्षेप में उल्लेख कीजिए।
15. निम्नलिखित सूक्तियों का अर्थ बताइए–
   (क) जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कुछ दरसाइ।
   (ख) अबिगत-गति कछु कहत न आवै।
   (ग) ज्यों गूँगे मीठे फल कौ रस, अन्तरगत ही भावै।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

इस पाठ के माध्यम से सूरदास के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

टिप्पणी

1. **राइ** = राजा। **पाइ** = पैर। **पंगु** = लँगड़ा। **करुनामय** = दयालु। **लंघै** = पार करता है।

2. **रूप-रेख गुन-जाति-जुगति-बिनु** = ईश्वर का न कोई रूप है, न आकृति, न गुण, न जाति और न वह किसी व्यक्ति से प्राप्त किया जा सकता है। **निरालंब** = बिना किसी सहारे के। **अगम** = अगम्य। **अगोचर** = इन्द्रियों से परे। **अंतरगत** = हृदय में।

3. **पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत** = बार-बार उसी को पकड़ते हैं। **करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा कमल बैठकी साजति** = पृथ्वी श्रीकृष्ण के प्रत्येक पद पर, प्रत्येक मणि में उनके लिए बैठने को कमल का आसन सजाती है। श्रीकृष्ण के पद कमल-सम हैं। अतः उनके प्रतिबिम्ब भी कमल के समान ही हैं। **द्वै दतियाँ** = दो दाँत। **निरखि** = देखकर। **अँचरा** = आँचल। **तर** = नीचे।

4. **बल** = बलराम। **गाइनि** = गायों के। **रहौंगो** = रहूँगा। **दैहौं** = दूँगी, दूँगा।

5. **आवै मन बहराइ** = मन बहला आवे। **मारत ताहि रिंगाइ** = उसको चलाकर थका डालते हैं क्योंकि वह छोटा होने से धीरे-धीरे चल पाता है। **न पत्याहि** = विश्वास नहीं करती हो। **सौहँ** = शपथ। **दिवाइ** = दिलाकर।

6. **राखे अँग-अँग भोरि** = अंग-अंग को मोहित कर लिया है। **बँध्यौ राग की डोरि** = (प्रेम-रज्जु) (संगीत) में बँधा है।

7. इस पद में उद्धव के वापस लौटने पर श्रीकृष्ण ब्रज-जीवन का स्मरण करके दुःखी हो रहे हैं। **सिरात** = व्यतीत होते थे। **जदु-तात** = श्रीकृष्ण। **दह्यौ** = दही (दधि)।

8. **आसा लागि.....स्वासा** = जब तक शरीर में साँस है तब तक हम आशा करती रहेंगी। **सकल जोग के ईस** = सब प्रकार की योग-साधना में निपुण। **अवराधै** = आराधना करे। **कोटि बरीस** = करोड़ों वर्ष। **हुतौ** = था। **सखा** = मित्र।

9. **अयाने** = अनजान, अज्ञानी। **मष्ट करौ** = मौन धारण करो। **बूझति बात निदाने** = अन्तिम बात पूछती है। **अबला** = नारी (जन)। **दिगम्बर** = (दिक् + अम्बर) नग्न रहना (दिगम्बरत्व) दिशाएँ ही वस्त्र हैं जिसके ऐसा।

10. **करैगौ गाँसी** = छल करोगे। **सबै मति नासी** = सारी बुद्धि नष्ट हो गयी। **अभिलाषी** = अभिलाषा करनेवाला, इच्छुक।

11. **क्रम क्रम करि कै** = धीरे-धीरे। **अलक लड़ैतो** = अति प्यारा, बहुत दुलारा। **धाइ** = धात्री, पालन-पोषण करनेवाली। **टेव** = आदत। **मया** = दया। **तातो जल** = तप्त जल, गर्म पानी।

●●